अय्यूब, श्रेष्ठगीत, सभोपदेशक, भजनसंहिता, तथा नीतिवचन

(जो बच्चों के शिक्षक हैं उन्हें अध्ययन न0 पी 4 बी पढ़ना चाहिये)

प्रार्थना: हे परमेश्वर, सदियों पहले आपने इब्रानी भाषा बोलने वाले इस्राएलियों को उभारा कि वे आपकी स्तुति के लिये, लोगों की शिक्षा के लिये तथा उनके प्रोत्साहन के लिये सुन्दर कविताओं को रचें, हमारी सहायता कीजिये कि हम उन सुन्दर कविताओं का सदुपयोग कर सकें। आमीन।

ऐसी गतिविधि का चुनाव कीजिये जो लोगों की आवश्यकता को पूरा कर सके।

1. **काव्यात्मक पुस्तकों को पढ़ाने के लिये परमेश्वर के वचन का प्रार्थनापूर्वक विशेष अध्ययन कीजिये।**

प्राचीन इस्राएल के काव्य की श्रेष्ठता व प्रभावशीलता का परिचय दीजिये।

- इस काव्य में विभिन्न संस्कृतियों की कविताएं होती हैं: प्रत्येक पंक्ति के शब्दों का अन्त एक समान लगता है, इसमें मात्रा आदि भी होती है, उच्चारणों में नियम के अनुसार दबाव दिया जाता है। ऐसी कविता का अनुवाद करना कठिन होता है। परमेश्वर ने चाहा, कि प्रत्येक भाषा में लोग उसका वचन पढ़ें और इसलिए उसने दूसरे प्रकार की काव्य-शैली का प्रयोग किया।
- प्राचीन इस्राएल के कवियों ने सौन्दर्य को लेकर ऐसी संतुलित रचनाएं की हैं जिनमें केवल शब्दों व उच्चारणों में दबाव ही नहीं होता पर वे सब प्रकार की संस्कृतियों तथा भाषाओं में उपयुक्त बैठती हैं। परमेश्वर ने उन कवियों की ऐसी सहायता की है कि वे अपने विचारों को दो या दो से अधिक वाक्यों का प्रयोग करके सही अर्थ समझा सके।
- नीतिवचन 16:11 में वह विचार ज्ञात करें जिसकी दूसरे विचार के साथ तुलना करके संतुलन बैठाया गया है।
- नीतिवचन 13:1 में एक विचार का किस विरोधी विचार से तुलना करके संतुलन किया गया है, ज्ञात करें।

हे आलसी चींटियों के पास जा, उनके काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो। नीतिचचन 6:6

नाटक की पुस्तकें : अय्यूब तथा श्रेष्ठगीत

अय्यूब ऐसे व्यक्तियों के तीखे वार्तालाप अपनी पुस्तक में प्रस्तुत करता है जिनके परमेश्वर व उसके न्याय से संबंधित विचारों में गहरी भिन्नता है। अध्याय 11 में अयूब का मित्र सोपर यह कहकर एक सामान्य गलती करता है कि अपने पापों के कारण लोग दुख उठाते हैं, जिसे हिन्दू धर्म में कर्म का सिध्दान्त कहा जाता है।

अयूब 11:11-15 में देखें कि सोपर अय्यूब पर क्या दोष लगाता है?

अय्यूब 12:1-3 में देखें कि सोपर के परामर्श देने पर अय्यूब ने क्या सोचा?

श्रेष्ठगीत में युवा. प्रेमियों के परस्पर प्रेम की भावनाओं को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इससे परमेश्वर और एक विश्वासी तथा प्रभु यीशु और उसकी दुल्हन अर्थात् उसके शिष्यों के मध्य आपसी प्रेम की ओर संकेत किया गया है।

भजनसंहिता में प्राचीन इस्राएलियों के गीत प्रस्तुत किये गये हैं।

- प्राय: प्रत्येक मसीही कलीसिया अपनी आराधना में भजनसंहिता का प्रयोग करती हैं।
- भजनसंहिता में राजा दाऊद, उसकी आराधना के अगुवे आसाप, एवं अन्य लेखकों ने परमेश्वर के प्रति अपने मन के विचार, स्तुति, विनतियां, क्रोध, धन्यवाद, विरोध, आशा, निराशा आदि प्रस्तुत किये हैं।
- 2 शमूएल 23:1 में देखें कि दाऊद को उसके अंतिम दिनों में क्या कहा गया?

नीतिवचन: बुद्धि के वचन

नीतिवचन दाऊद के पुत्र सुलैमान एवं अन्य कुछ लेखकों के द्वारा लिखे गये।

नीतिवचन अध्याय 5 पढ़ें तथा निम्नलिखित बातें ज्ञात करें :

- एक वेश्या की बातें कैसी होती हैं? (देखें पद 3 व 4)
- उसके पांव किस ओर बढ़ते हैं? (पद 5 व 6)
- पतियों को अपनी पत्नी के प्रति क्यों विश्वासयोग्य होना चाहिये? (पद 15-23)

इस पुस्तक में अनेक स्थलों पर युवकों को परामर्श दिये गये हैं :

''हे मेरे पुत्र, मेरे वचन ध्यान धरके सुन,
    और अपना कान मेरी बातों पर लगा।
इनको अपनी आंखों की ओट न होने दे,
    वरन् अपने मन में धारण कर।
क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं,
    वे उनके जीवित रहने का,
और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।
  सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।'' (नीतिवचन 4:20-23)।

''आलसी कहता है, मार्ग में सिंह है, चौक में सिंह है। जैसे किवाड़ अपनी चूल पर घूमता है, वैसे ही आलसी अपनी खाट पर करवटें लेता है।'' (नीतिवचन 26:13-14)।

नीतिवचन 31:10-31 पढ़ें व आदर्श पत्नी के कुछ गुणों पर विचार करें कि वह क्या करती है?

सभोपदेशक की पुस्तक: एक वृध्द व्यक्ति की निराशाजनक शिकायतें।

एक वृध्द लेखक, अर्थात् सुलैमान, अपने जीवन काल के अनुभव जो उसने सूर्य के नीचे यानि पृथ्वी पर प्राप्त किए, उन्हें लिखता है। उसने हर प्रकार का सुख भोगा किन्तु अन्त में उसने पाया कि सब कुछ व्यर्थ है, अर्थात वायु को पकड़ना है।

2. सप्ताह के मध्य आपके सहयोगी जो गतिविधियां करने जा रहे हैं उनकी योजना बनाइए।

- माता-पिताओं के पास जाएं और उनकी सहायता करें कि वे नीतिवचन 13:24, 19:18, 22:6, 23:13, का पालन करते हुए इन बातों को व्यवहारिक रूप दें।
- उनके बच्चों की सहायता करें कि बच्चे नीतिवचन 1:8-9 के अनुसार आचरण कर सकें।
- उन विश्वासियों से, जो गहन बाइबल अध्ययन में आनन्द ले रहे हैं, अय्यूब, भजनसंहिता, व नीतिवचन आदि पुस्तकों की सावधानीपूर्वक जांच करने को कहें। बाद में उन्हें अवसर दें कि वे बता सकें कि उन्होंने कौन सी अच्छी बातें पाई।
- उन नये चरवाहों की, जिन्हें आप प्रशिक्षित कर रहे हैं, सहायता करें कि वे पुराने नियम की पुस्तकों में काव्य साहित्य को पहचान सकें।
- भजनसंहिता की पुस्तक से उन पदों को छांटें, जो हमारा ध्यान परमेश्वर की ओर खींचते और उसकी स्तुति करने के लिये हमें प्रोत्साहित करते हैं । तब उन पदों को आराधना में प्रयोग कीजिये।

3. अपने सहयोगियों के साथ आगामी आराधना सभा की तैयारी की योजना बनाएं।

पुराने नियम के काव्य साहित्य की विशेषताओं के विषय बताएं और कुछ उदाहरण प्रस्तुत करें।

विभिन्न काव्यात्मक पुस्तकों के मुख्य विषयों के बारे में बताएं।

नीतिवचन की पुस्तक से कुछ नीति के वचन समझाएं।

जिन विश्वासियों को काव्यात्मक पुस्तकों के अध्ययन से लाभ मिला है, उन्हें अवसर दें कि वे बता सकें।

बच्चों को अवसर दीजिये कि वे अपनी तैयार की गई बातों को प्रस्तुत कर सकें।

प्रभु भोज विधि मनाने के लिये भजनसंहिता 133 पढ़ें, और समझाएं कि जब हम प्रभु यीशु के बलिदान को रोटी तोड़ने के द्वारा स्मरण करते हैं, तो हम विश्वासियों के बीच गहरी आपसी-एकता को अनुभव करते हैं।

दो-दो या तीन-तीन व्यक्तियों के छोटे समूह बनाएं ताकि एक दूसरे के लिये प्रार्थना कर सकें और इब्रानी कविता की उपयोगी बातों को दोहरा सकें।

सब लोग भजनसंहिता 145:1-2 कंठस्थ करें।